**श्री बजरंग बाण ( Bajrang Baan )**

॥ दोहा ॥

**निश्चय प्रेम प्रतीति ते,बिनय करै सनमान।**  
**तेहि के कारज सकल शुभ,सिद्ध करै हनुमान॥**

**॥ चौपाई ॥**

**जय हनुमन्त सन्त हितकारी।सुनि लीजै प्रभु अरज हमारी॥  
जन के काज विलम्ब न कीजै।आतुर दौरि महा सुख दीजै॥**

**जैसे कूदि सिन्धु वहि पारा।सुरसा बदन पैठि बिस्तारा॥  
आगे जाय लंकिनी रोका।मारेहु लात गई सुर लोका॥**

**जाय विभीषण को सुख दीन्हा।सीता निरखि परम पद लीन्हा॥  
बाग उजारि सिन्धु महं बोरा।अति आतुर यम कातर तोरा॥**

**अक्षय कुमार मारि संहारा।लूम लपेटि लंक को जारा॥  
लाह समान लंक जरि गई।जय जय धुनि सुर पुर महं भई॥**

**अब विलम्ब केहि कारण स्वामी।कृपा करहुं उर अन्तर्यामी॥  
जय जय लक्ष्मण प्राण के दाता।आतुर होइ दु:ख करहुं निपाता॥**

**जय गिरिधर जय जय सुख सागर।सुर समूह समरथ भटनागर॥  
ॐ हनु हनु हनु हनु हनुमन्त हठीले।बैरिहिं मारू बज्र की कीले॥**

**गदा बज्र लै बैरिहिं मारो।महाराज प्रभु दास उबारो॥  
ॐकार हुंकार महाप्रभु धावो।बज्र गदा हनु विलम्ब न लावो॥**

**ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं हनुमन्त कपीसा।ॐ हुं हुं हुं हनु अरि उर शीशा॥  
सत्य होउ हरि शपथ पायके।रामदूत धरु मारु धाय के॥**

**जय जय जय हनुमन्त अगाधा।दु:ख पावत जन केहि अपराधा॥  
पूजा जप तप नेम अचारा।नहिं जानत कछु दास तुम्हारा॥**

**वन उपवन मग गिरि गृह माहीं।तुमरे बल हम डरपत नाहीं॥  
पाय परौं कर जोरि मनावों।यह अवसर अब केहि गोहरावों॥**

**जय अंजनि कुमार बलवन्ता।शंकर सुवन धीर हनुमन्ता॥  
बदन कराल काल कुल घालक।राम सहाय सदा प्रतिपालक॥**

**भूत प्रेत पिशाच निशाचर।अग्नि बैताल काल मारीमर॥  
इन्हें मारु तोहि शपथ राम की।राखु नाथ मरजाद नाम की॥**

**जनकसुता हरि दास कहावो।ताकी शपथ विलम्ब न लावो॥  
जय जय जय धुनि होत अकाशा।सुमिरत होत दुसह दु:ख नाशा॥**

**चरण शरण करि जोरि मनावों।यहि अवसर अब केहि गोहरावों॥  
उठु उठु चलु तोहिं राम दुहाई।पांय परौं कर जोरि मनाई॥**

**ॐ चं चं चं चं चपल चलन्ता।ॐ हनु हनु हनु हनु हनुमन्ता॥  
ॐ हं हं हांक देत कपि चञ्चल।ॐ सं सं सहम पराने खल दल॥**

**अपने जन को तुरत उबारो।सुमिरत होय आनन्द हमारो॥  
यहि बजरंग बाण जेहि मारो।ताहि कहो फिर कौन उबारो॥**

**पाठ करै बजरंग बाण की।हनुमत रक्षा करै प्राण की॥  
यह बजरंग बाण जो जापै।तेहि ते भूत प्रेत सब कांपे॥**

**धूप देय अरु जपै हमेशा।ताके तन नहिं रहे कलेशा॥**

**॥ दोहा ॥**

**प्रेम प्रतीतिहिं कपि भजै,सदा धरै उर ध्यान।  
तेहि के कारज सकल शुभ,सिद्ध करै हनुमान॥**